| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 5, May2023||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205296|

ज्ञानप्रकाश 'पीयूष' के काव्य में नारी का यथार्थ–चित्रण

किरण D / O श्री दलबीर सिंह, शोधार्थी

हिसार(हरियाणा)

ज्ञानप्रकाश 'पीयूष' हरियाणा के समकालीन साहित्यकार में उभरते हुए साहित्यकार है। प्राचीन समय से ही नारी के जीवन में विविधता देखने को मिलती है। समय–समय पर अनेक महान साहित्यकारों ने नारी के जीवन पर प्रकाश डाला है। किसी युग में नारी का शोषण हुआ है तो किसी युग में नारी को ईश्वर का प्रतीक बताया गया है। समाज में नारी का स्थान अनेक साहित्यकारों ने अपने काव्य में अलग–अलग दर्शाया है। प्राचीन काल में जहां नारी की स्थिति दयनीय थी तो वही भक्तिकाल में सूफी कवियों ने नारी को ईश्वर बताया। रीतिकालीन कवियों ने जहां नारी को भोग विलास की वस्तु समझा तो वही छायावादी कवियों ने नारी को श्रद्धा का प्रतीक बताया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नारी की स्थिति बदलती रही है।

'पीयूष' जी वर्तमान परिस्थितियों से भलीभांति परिचित थे। उनके काव्य में नारी का यथार्थ चित्रण पर प्रकाश डालने से पहले यथार्थ के अर्थ पर एक नजर डाल लेते है– यथार्थ शब्द अंग्रेजी भाषा के Real शब्द की उत्पत्ति से है जिसका अर्थ 'वस्तु' है। ' मानक' हिन्दी शब्दकोश के अनुसार यथार्थ का अर्थ 'सत्य, प्रकुत, उचित ''[1] दर्शाया गया है। 'अतः Real का अर्थ वस्तु सम्बधी विचार से है । जो प्रत्यक्ष जगत को सत्य मानता है। ज्ञान प्रकाश जी के काव्य में नारी की स्थिति मिली जुली रही है एक तरफ है मां की भूमिका में अपने बच्चे का पालन पोषण करती है तो दूसरी अवस्था बहू में अपने परिवार के साथ लड़ाई झगड़े के साथ व्यतीत करती है। वर्तमान युग में नारी समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही है चाहे वह क्षेत्र शिक्षा जगत का हो, खेल जगत का हो, फिल्मी क्षेत्र हो या फिर सैनिक क्षेत्र हो। वर्तमान में ही नारी तीनों सेनाओं में अपना योगदान दे रही है। समाचार पत्रों के अनुसार तथ्यों के साथ बात करे तो हम देखते है कि तीनों सेना में कुल मिलाकर 9,118 महिलाएं हैं। नारी समाज के लिए केंद्र सरकार प्राथमिकता के आधार पर सेनाओं में उनकी भूमिका को बढ़ाने के लिए कई तरह के प्रयास कर रही है। यही कारण भी साल 2019 की तुलना में साल 2020 में भारत की तीनों सेनाओं में महिलाओं की संख्या में बढ़त देखी गई है। अब महिलाएं लड़ाकू जहाज उड़ाने, पानी के जहाज पर अहम जिम्मेदारियां संभालने के साथ ही स्पेशनल ऑपरेशन के जरिए दुश्मन को सबक सिखाने में अहम भूमिकाएं निभा रही हैं। भारतीय सेना में सबसे ज्यादा महिलाएं नेवी में काम कर रही हैं। नेवी में लगभग 6.5 प्रतिशत महिलाएं हैं जबकि नौसेना में 600 महिला ऑफिसर्स और भारतीय वायुसेना में इनकी संख्या लगभग 1607 है। इसके अलावा, मिलिट्री मेडिकल स्ट्रीम में करीब 1670 महिला डॉक्टर्स, 190 डेंटिस्ट्स और 4,750 नर्सेज हैं। बीते 6 सालों में भारतीय सेना में महिलाओं की संख्या तीन गुना बढ़ गई है। साल 2019 के आंकड़ों को देखें तो विश्व की दूसरी सबसे बड़ी थल सेना में महिलाओं की संख्या केवल 3.8 प्रतिशत है जबकि वायु सेना में इनकी संख्या 13 प्रतिशत और नौसेना में 6 प्रतिशत है। जब हम ऐसे तथ्यों को देखते है तो वर्तमान में नारी का स्थान श्रेष्ठ है। समाज में कुछ ऐसे वर्ग भी है जहां नारी की हालत अभी भी नाजुक बनी हुई है। समाज के कुछ सीमित इलाके ऐसे हैं जहां पर नारी को केवल चार दीवारी के अंदर ही रखा जाता है। उसे खाना बनाना और बच्चे पैदा करने के लिए ही समझा जाता है। समाज के कुछ ऐसे वर्ग भी है जहां जीवन जीने के लिए नारी को न तो शिक्षा का अधिकार मिला हुआ है और ना ही आजादी के साथ अपनी विचारधारा रखने का। कवि ने अपने काव्य में ऐसे समाज की स्थिति का अवलोकन किया है जहां पर नारी केवल कामकाजी के रूप में ही दिखाई पड़ती है। सामाजिक परिस्थितियां और साहित्यकार एक दूसरे से प्रभावित होते है। इनकी दृष्टि व्यापक है और इनके अर्थ व भावार्थ समग्र है। इन कविताओं में भावों, विचारों व आत्मज्ञान आदि सभी प्रकार के रस विद्यमान है। ज्ञान प्रकाश के काव्य के सन्दर्भ में नारी समाज का नेतृत्व करने वाली डॉ. शील कौशिक ने लिखा भी है :–

''पीयूष की कविताएँ पाठकों से संवाद करती हुई , उनके मर्म को संस्पर्श करती है। इन कविताओं में कथ्यानुरूप सीधा –सादा शिल्प व सरल, सहज सापेक्ष सृजन जीवनानुभवों से समृद्व समाज, सापेक्ष सृजन व सकारात्मक बोध तथा उदार भावनाओं से ओतप्रोत इस संग्रह के लिए ज्ञानप्रकाश 'पीयूष' साधुवाद के पात्र है।

2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 5, May2023||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205296|

मेरा अटल विश्वास है कि "अँधरे से उजाले का सफर तय करती ये कविताएँ पाठकों व समीक्षकों के बीच समादृत होगी।"[2]

इनके बारे में लाजपत राय करने लिखा भी है कि–

" ज्ञानप्रकाश 'पीयूष' की कलम में ऐसी अद्भुत क्षमता है कि वे अपने अन्तर्मन के भावों को चन्द शब्दों में ही इतनी दक्षता के साथ कह जाते है कि पाठक उनकें कलात्मक कौशल से अभिभूत हो उठता है। कवि का जीवन के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है। कवि ने इसे अपने 'आत्म कथ्य' में स्वीकारा है और प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ इसका साक्षात् प्रभाव है।"[3]

जयशंकर प्रसाद ने नारी को श्रद्धा कहा है। आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक नारी के बारे में समाज के लोगों की विचारधारा अलग–अलग रही है। आदिकाल में जहाँ वह शोषण का शिकार रही तो भक्ति काल में उसे ईश्वर साधना में बाधक माना गया। रीतिकाल में आकर वह भोग विलास की वस्तु बन कर रह गई तो आधुनिक काल में नारी को श्रद्धा का प्रतीक और परोपकार की मूर्ति के रूप में संबोधन किया गया। माना कि आगे चलकर कवियों ने उसे प्राचीन समय की भांति नग्नता के रूप में परोसने की कोशिश की लेकिन आजादी के बाद संविधान ने उसे बराबर का हक दिया। ज्ञान प्रकाश ने नारी को त्याग की मूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया है जो बिना किसी स्वार्थ के दो परिवार के लोगों का नाम रोशन करते हैं। वर्तमान में ऐसी नारियां हुई है; जिन्होंने समाज का नेतृत्व किया है। चाहे वह खेल हो, राजनीति हो , धर्म हो, समाज हो, फैशन हो या फिर किसी संस्था का उत्तरदायित्व निभाने के रूप में हो। शिक्षा के क्षेत्र में भी नारी ने सफलता का परचम लहराया है, तो वहीं समाज के रूप में भी परोपकार की मूर्ति बन कर भी उभरी है। कवि ने अपने कावय में नारी के विविध रूपों पर प्रकाश डाला है। उन्होंने माना है कि वह त्याग की मूर्ति; करुणा की सागर; वरदान की मुद्रा के लिए उठा हुआ हाथ और स्वर्ग के समान है। वह अपना दायित्व निभाते हुए अपने परिवार के लिए सुखों की बरसात करती रहती है। वह अपना रक्त सींच कर कर अपने बच्चों का पालन पोषण करती है। खुद भूखी रहकर भी अपने बच्चों का पेट भरती है। बचपन में जब वह अपने माँ–बाप से; युवावस्था में भाई से; शादी के बाद पति से; उसके बाद बेटों से और बुढ़ापे में बहुओं से सदैव सुनती रहती है। लेकिन मौन रहकर भी बहुत कुछ बोल जाती हैं। चाहे वह छोटी बच्ची के रूप में हो या फिर माँ या बहन के रूप में हो। कवि ने अपनी कविता प्यार दर्पण से मैं लिखा है कि एक नारी अपने बचपन में नादान बच्ची की अवस्था में रहती है। जब धीरे–धीरे बड़ी होती है तो उसे सजना संवरना अच्छा लगता है। उसे दिनभर आईने के सामने बैठना अच्छा लगता है। ऐसा लगता है जैसे आईना उसे कुछ कह रहा हो। आईना उसे बोल रहा हो कि अब तुम बड़ी हो गई हो लेकिन उसे अभी तक इस बात का एहसास नहीं होता। घर में बड़े भाई और माँ का अजीब नजरों से उन्हें देखना ऐसा लगता है, जैसे नादान बच्ची ने कोई अपराध कर दिया हो। वह अपने आप से कहती है मुझे आईने से प्यार हो गया है जैसा कि एक पंक्ति में दिया गया है–

''नादान बच्ची मत समझना
हो गई हूं अब बड़ी
भाई कहता पागल मुझे
मम्मी भी है देखती
अजीब नज़रों से मुझे
यह क्या हो गया
प्यार दर्पण से हो गया''[4]

'माँ' नामक कविता में कवि ने माँ की भावनाओं को चित्रित किया है। माँ ही परिवार का पालन–पोषण करती हैं। एक नारी के लिए माँ बनना सौभाग्यशाली माना जाता है। माँ के दिल में हमेशा प्यार भरा रहता है। माँ को जननी की संज्ञा भी दी गई है क्योंकि उसमें प्राकृतिक धर्म पोषण की स्वाभाविक समता है। कवि ने माँ की उस अवस्था का भी चित्रण किया है। जब वह घर में कढ़ाई सिलाई साफ सफाई और खाना बनाने की विधियों में भी निपुण होती है। वह उदारता की खान होती है। वह अपने बच्चों का पालन पोषण नहीं करती, बल्कि गाय, कुत्ते, बिल्ली, कबूतर, चिड़िया, जैसे जीव–जंतुओं का भी ख्याल रखती हैं। माँ के बारे में कवि ने कहा कि वह तो भगवान से भी बड़ी होती है; जो हर समय अपने बच्चों का ख्याल रखती है। उनके दुख सुख में साथ में खड़ी रहती है। एक माँ के लिए उसका बच्चा चाहे वह काला ही क्यों ना हो लेकिन उसके लिए

2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 12, Issue 5, May2023||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205296|

तो वह राजकुमार की तरह होता है। माँ दिन–रात खेत में काम करके भी अपने बच्चों से प्यार करती है और खाना बनाकर अपनी छाती से लगाकर लोरी भी सुनाती है। इस सन्दर्भ में कवि ने लिखा है–

''मेरे लाल कलेजे के टुकड़े
आँखों के तारे चंदा से प्यारे
सुंदर सलोने राजा बेटे
यह कैसा तेरा हाल
फिर चूमा मुख बार–बार
खूब लड़ाया लाड़
देखो माँ की ममता
अँधी चाहत अंधा प्यार
दिखती नहीं बच्चे की
बहती नाक गंदा बदन
आंसू पसीने की धार
मुख चूम रही कैसे रही दुलार
अद्‌भुत है माँ की ममता
अनुपम उसका प्यार ''[5]

कवि ने नारी को बहन और बेटी की भूमिका को भी सुन्दर रूप में चित्रित किया है। उनका विचार है कि बहन तो पवित्र प्यार की डोरी होती है, जो परिवार को बांधे रखती है। बेटी के रूप में वह आबदार मोती है, घर में प्रकाश फैलाने वाली ज्योति है। सच कहे तो वह एक कवि की कविता है, जो अपने लय सुर ताल में नदी और झील की भांति मधुर अभिव्यक्ति प्रदान करती है। सृष्टि का सृजन करती हुई खुशियाँ देने वाले सर्वोत्तम शक्ति है। घर में रंगीन माहौल पैदा करने वाली आकर्षित रंगोली की भाँति सुशोभित होती है। घर में बेटी निर्जीव शरीर में प्राण की भांति होती है। कवि ने उसे विविध रूपों में प्रस्तुत किया है।'बेटी' नामक कविता में कभी तो उसे किताब की संज्ञा दी है तो कभी छंद की संज्ञा दी है। उन्होंने लिखा है कि –

'' बेटी तुम हो छंद–सी
बहती मंद बयार–सी
मीठे अनुपम गीत–सी
कोई सुरीली तान–सी
खोई हुई पहचान–सी
घर के मान–सम्मान–से
अरमानों की
प्रथम किताब से
मोतियों पर
चमकती आब सी''[6]

नारी के बारे में कवि ने बताया है कि नारी अपनी मर्यादा में रहकर ही परिवार के लोगों का पालन–पोषण करने के साथ–साथ प्रदान करती है। वह बचपन से ही संस्कारों को सीख लेती है। श्रृंगार करना, टीका बिंदी लगाना, चलना फिरना; यहां तक कि सिर पर चुन्नी रखना भी बचपन में ही सीख लेती है। ऐसे ही अवस्था का कवि ने अपनी कविता 'कमाल की शख्सियत 'में लिखा है कि –

''जवान हुई तो
इतराना इठराना
दर्पण देखकर शर्माना
चुन्नी और कर्म को छुपाना
सीख लिया था अपने आप
माँ बनते ही सिर पर पल्लू रखना
माँग भरना काजल लगाना

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
||Volume 12, Issue 5, May2023||
|DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1205296|

टीका बिंदी लगाना
जीना सलीके से और
चलना फिरना गरिमा से
सीख लिया था अपने आप''[7]

उन्होंने नारी को त्याग की मूर्ति और सृष्टि की जननी के रूप में संबोधन किया है। उसके बाल रूप का, यौन रोग का और माँ के रूप का विविध रूपों में चित्रण किया है। नारी समाज के लिए उतनी ही उपयोगी है। जितनी समाज के जीव–जंतुओं के लिए प्रकृति की जरूरत है। वह दुःख सुख में सदैव पुरुष के साथ खड़ी रहती है। वह कभी बेटी तो कभी बहन पत्नी माँ और दोस्त के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करती है।

कवि ने समाज की समस्याओं को उजागर करते हुए मजदूर और गरीब किसान की बेटी का यर्थाथता के साथ मार्मिक चित्रण किया है। उन्होंने मजदूरों किसानों की मार्मिक अवस्था का यथार्थ चित्रण करते हुए पाठकों के हृदय में उनके प्रति संवेदनशीलता प्रकट की है। इसके साथ साथ गाँव की संस्कृति, सभ्यता के बारे में चिंता करते हुए पुलिस प्रशासन पर भी व्यंग्य किया है। उन्होंने वर्दीधारी लोगों की मनोदशा और एक मजदूर की मनोदशा का सजीव चित्रण किया है।, स्वार्थ भाव और गिरते हुए मानवीय मूल्यों के प्रति भी चिंता व्यक्त की है। जैसे–

'' वृहन्नला के स्त्री रूप में
अर्जुन दे सका शिक्षा
नृत्य कला संगीत की
उत्तरा को निर्विघ्न
पहचाना ना जा सका
एक वर्ष अज्ञातवास का
सकुशल हुआ पूरा
धर्म करता है रक्षा
आपद काल में मानव की ''[8]

कवि ने रिश्तों को भी भावुतापूर्ण अभिव्यक्ति दी हैं। माँ, पिता, भाई–बहन, बेटी के रिश्तों का इन्सान के जीवन में क्या महत्व होता है। यह बहुत ही सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया है। कवि ने सरल भाषा के सहारे अपने भावों को अभिव्यक्ति दी है। सभी कविताएँ कवि के अनुभव– जनित कथन के रूप में होने के कारण ये यर्थाथ का परिचय तो देती ही हैं साथ ही सत्य के अधिक निकट प्रतीत होने के कारण इनके द्वारा दिया गया संदेश विश्वसनिय भी है। छंद मुक्त होने के कारण पाठक पर इनका रचना विधान भी थोपा नहीं गया है। ये आकार में छोटी किन्तु भाव पक्ष की प्रबलता व इनमें निहीत संदेश के संदर्भ में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इनका दायरा काफी विस्तृत एवं व्यापक हैं। ये कविताएँ जीवन की के गूढ़ रहस्यों तथा जीवन की जटिलताओं की सहज व्याख्या भी हैं; एंव शाशवत–सत्यों की परिभाषा भी। विभिन्न प्रकार के अलंकारों प्रतीकों, बिम्बों तथा रसों से भरी कविताएँ पाठक की साहित्यिक तृप्ति कराने में पूरी तरह सक्षम है।

सन्दर्भ – ग्रथ सूची

1 डॉ. शील कौशिक–विशेष साक्षातकार
2 शुभतारिका मैंगजीन – नव. 19 पृष्ठ –71
3 मानक हिन्दी शब्दकोश, पृष्ठ संख्या – 747
4 ज्ञानप्रकाश पीयूष; साथी है संवाद मेरे , पृ.सं. 81
5 ज्ञानप्रकाश पीयूष; साथी है संवाद मेरे , पृ.सं. 80
6 ज्ञानप्रकाश पीयूष; साथी है संवाद मेरे , पृ.सं. 93
7 ज्ञानप्रकाश पीयूष; साथी है संवाद मेरे , पृ.सं. 96
8 ज्ञानप्रकाश पीयूष; साथी है संवाद मेरे , पृ.सं. 34